मेरी श्रेष्ठ कविताएं

बच्चन

अपनी सभी काव्य-कृतियों में से कवि द्वारा स्वयं चुनी श्रेष्ठ कविताएं

Scanned by TapScanner

मेरी श्रेष्ठ कविताएं

बच्चन की काव्य-कृतियों के क्रमानुसार कविता-सूची

प्रारंभिक रचनाएं (1929-1933)		पृष्ठ
कोयल	...	21
कलियों से	...	24
उपवन	...	25
गीत-विहंग	...	28
तीन रुबाइयाँ	...	30
मधुशाला (1933-1934)		
मृदु भावों के अंगूरों की	...	32
प्रियतम, तू मेरी हाला है	...	32
मदिरालय जाने को घर से	...	32
हाथों में आने से पहले	...	33
लाल सुरा की धार लपट-सी	...	33
एक बरस में एक बार ही	...	33
दो दिन ही मधु मुझे पिलाकर	...	34
छोटे-से जीवन में कितना	...	34
करले, करले कंजूसी तू	...	34
ध्यान मान का, अपमानों का	...	34
गिरती जाती है दिन-प्रतिदिन	...	35
यम आएगा साक़ी बनकर	...	35
ढलक रही हो तन के घट से	...	35
मेरे अधरों पर हो अंतिम	...	36
मेरे शव पर वह रोए, हो	...	36
और चिता पर जाय उँडेला	...	36
देख रहा हूँ अपने आगे	...	37

Scanned by TapScanner

कभी निराशा का तम घिरता ... 37
मिले न पर ललचा-ललचा क्यों ... 37
क़िस्मत में था खाली खप्पर ... 37
उस प्याले से प्यार मुझे जो ... 38
जिसने मुझको प्यासा रक्खा ... 38
क्या मुझको आवश्यकता है ... 38
कितनी जल्दी रंग बदलती ... 39
छोड़ा मैंने पंथ-मतों को ... 39
कितनी आई और गई पी ... 39
दर-दर घूम रहा था तब मैं ... 39
मैं मदिरालय के अंदर हूँ ... 40
वह हाला, कर शांत सके जो ... 40
कहां गया वह स्वर्गिक साक़ी ... 40
अपने युग में सबको अनुपम ... 41
कितने मर्म जता जाती है ... 41
जितनी दिल की गहराई हो ... 41
मेरी हाला में सबने ... 41
कुचल हसरतें कितनी अपनी ... 42

मधुबाला (1934-1935)

मधुबाला ... 43
प्याला ... 47
हाला ... 52
बुलबुल ... 57
इस पार-उस पार ... 61
पाँच पुकार ... 65
पगध्वनि ... 68

मधु कलश (1935-1936)

मधु कलश ... 73
कवि की वासना ... 78
कवि का गीत 82
पथभ्रष्ट ... 85
लहरों का निमंत्रण ... 89

Scanned by TapScanner

निशा-निमंत्रण (1937-1938)

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है ... 97
संध्या सिंदूर लुटाती है ... 98
बीत चली संध्या की वेला ... 98
तुम तूफ़ान समझ पाओगे ... 99
है यह पतझड़ की शाम, सखे ... 100
कहते हैं, तारे गाते हैं ... 100
साथी, सो न, कर कुछ बात ... 101
यह पपीहे की रटन है ... 101
रात आधी हो गई है ... 102
मैंने खेल किया जीवन से ... 103
अब वे मेरे गान कहाँ हैं ... 103
बीते दिन कब आने वाले ... 104
मधुप, नहीं अब मधुवन तेरा ... 104
आओ, हम पथ से हट जाएं ... 105
क्या कंकड़-पत्थर चुन लाऊँ ... 105
किस कर में यह वीणा धर दूं ... 106
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं ... 106
तू क्यों बैठ गया है पथ पर ... 107
जय हो, हे संसार, तुम्हारी ... 107
जाओ, कल्पित साथी मन के ... 108

एकांत-संगीत (1938-1939)

अब मत मेरा निर्माण करो ... 109
कोई गाता, मैं सो जाता ... 109
कोई नहीं, कोई नहीं ... 110
मैं जीवन में कुछ कर न सका ... 111
किसके लिए ? किसके लिए ? ... 111
किस ओर मैं ? किस ओर मैं ? ... 112
सोचा, हुआ परिणाम क्या ... 112
पूछता, पाता न उत्तर ... 113
तब रोक न पाया मैं आँसू ... 113
मिट्टी दीन कितनी, हाय ... 114

Scanned by TapScanner

शतशीश मगर नतशीश नहीं ... 115
चाहि, चाहि कर उठता जीवन ... 115
तुम्हारा लौह चक्र आया ... 116
अग्नि पथ ! अग्नि पथ ! अग्नि पथ ! ... 116
जीवन शाप या वरदान ... 117
जीवन में शेष विषाद रहा ... 117
अग्नि देश से आता हूँ मैं ... 118
विष का स्वाद बताना होगा ... 118
प्रार्थना मत कर, मत कर, मत कर ... 119
कितना अकेला आज मैं ... 119

आकुल अंतर (1940-1942)

लहर सागर का नहीं श्रृंगार ... 121
जानकर अनजान बन जा ... 122
कैसे भेंट तुम्हारी ले लूं ... 123
क्या है मेरी बारी में ... 123
वह नभ कंपनकारी समीर ... 124
लो दिन बीता, लो रात गई ... 125
दोनों चित्र सामने मेरे ... 126
चाँद-सितारो मिलकर गाओ ... 126
इतने मत उन्मत्त बनो ... 127
क्या करूँ संवेदना लेकर तुम्हारी ... 127
काल क्रम से — ... 128
मैं जीवन की शंका महान ... 130
... 131

सतरंगिनी (1942-1944)

नागिन ... 132
मयूरी ... 140
अँधेरे का दीपक ... 140
जो बीत गई ... 143
अजेय ... 145
निर्माण ... 146
दो नयन ... 147
नई झनकार ... 148

Scanned by TapScanner

मुझे पुकार लो ... 150
कौन तुम हो ... 151
तुम गा दो ... 153
नव वर्ष ... 154
कर्तव्य ... 154
विश्वास ... 155

बंगाल का काल (1943)

पड़ गया बंगाले में काल ... 157

हलाहल (1936-1945)

जगत-घट को विष से कर पूर्ण ... 163
जगत-घट, तुझको दूं यदि फोड़ ... 163
हिचकते औ' होते भयभीत ... 163
हुई थी मदिरा मुझको प्राप्त ... 164
कि जीवन आशा का उल्लास ... 164
जगत है चक्की एक विराट ... 164
रहे गुंजित सब दिन, सब काल ... 164
नहीं है यह मानव की हार ... 165
हलाहल और अमिय, मद एक ... 165
सुरा पी थी मैंने दिन चार ... 165
देखने को मुट्ठी भर धूलि ... 166
उपेक्षित हो क्षिति से दिन रात ... 166
आसरा मत ऊपर का देख ... 166
कहीं मैं हो जाऊँ लयमान ... 166
और यह मिट्टी है हैरान ... 167
पहुँच तेरे अधरों के पास ... 167

सूत की माला (1948)

नत्थू खैरे ने गांधी का कर अन्त दिया ... 168
आओ बापू के अन्तिम दर्शन कर जाओ ... 168
यह कौन चाहता है बापूजी की काया ... 170
अब अर्द्धरात्रि है और अर्द्धजल वेला ... 171
तुम बड़ा उसे आदर दिखलाने आए ... 172

Scanned by TapScanner

भेद अतीत एक स्वर उठता— ... 172
भारत के सब प्रसिद्ध तीर्थों से, नगरों से ... 173
थैलियाँ समर्पित की सेवा के हित हजार ... 174
बापू की हत्या के चालिस दिन बाद गया ... 175
'हे राम'-खचित यह वही चौतरा, भाई ... 175

खादी के फूल (1948)

हो गया क्या देश के सबसे सुनहले दीप का निर्वाण ... 178
वे आत्माजीवी थे काया से कहीं परे ... 183
उसके अपना सिद्धान्त न बदला मात्र लेश ... 183
था उचित कि गांधी जी की निर्मम हत्या पर ... 184
ऐसा भी कोई जीवन का मैदान कहीं ... 185
तुम उठा लुकाठी खड़े हुए चौराहे पर ... 186
गुण तो निःसंशय देश तुम्हारे गाएगा ... 186
ओ देशवासियो, बैठ न जाओ पत्थर से ... 187
आधुनिक जगत की स्पर्धापूर्ण नुमाइश में ... 188
हम गांधी की प्रतिभा के इतने पास खड़े ... 189

मिलन यामिनी (1945-1949)

चाँदनी फैली गगन में, चाह मन में ... 191
मैं कहाँ पर, रागिनी मेरी कहाँ पर ... 192
आज मन-वीणा, प्रिये, फिर से कसो तो ... 192
आज कितनी वासनामय यामिनी है ... 193
हास में तेरे नहाई यह जुन्हाई ... 194
प्राण कह दो, आज तुम मेरे लिए हो ... 194
प्यार के पल में जलन भी तो मधुर है ... 195
मैं प्रतिध्वनि सुन चुका, ध्वनि खोजता हूँ ... 196
प्यार, जवानी, जीवन इनका जादू मैंने सब दिन माना ... 196
गरमी में प्रातःकाल पवन बेला से खेला करता जब,
तब याद तुम्हारी आती है ... 198
ओ पावस के पहले बादल, उठ उमड़-गरज, घिर घुमड़-चमक
मेरे मन-प्राणों पर बरसो ... 199
खींचतीं तुम कौन ऐसे बंधनों से जो कि रुक सकता नहीं मैं ... 201
तुमको मेरे प्रिय प्राण निमंत्रण देते ... 203

Scanned by TapScanner

प्राण, संध्या झुक गई गिरि, ग्राम, तरु पर ... 204
सखि, अखिल प्रकृति की प्यास कि हम-तुम भीगें ... 206
सखि, यह रागों की रात नहीं सोने की ... 207
प्रिय, शेष बहुत है रात अभी मत जाओ ... 208
सुधि में संचित वह साँझ कि जब ... 209
जीवन की आपाधापी में कब वक़्त मिला ... 211
कुदिन लगा, सरोजिनी सजा न सर ... 213
समेट ली किरण कठिन दिनेश ने ... 213
समीर स्नेह-रागिनी सुना गया ... 214
पुकारता पपीहरा पि···आ, पि···आ ... 215
सुना कि एक स्वर्ग शोधता रहा ... 215
उसे न विश्व की विभूतियाँ दिखीं ... 216

प्रणय पत्रिका (1950-1954)

बीन, आ छेड़ूँ तुझे, मन में उदासी छा रही है ... 217
सो न सकूँगा और न तुझको सोने दूँगा, हे मन-बीने ... 218
मेरी तो हर साँस मुखर है, प्रिय, तेरे सब मौन सँदेसे ... 219
चंचला के बाहु का अभिसार बादल जानते हों ... 220
पाप मेरे वास्ते है नाम लेकर आज भी तुमको बुलाना ... 222
रात आधी, खींचकर मेरी हथेली एक उँगली से लिखा था 'प्यार' तुमने 223
तुम्हारे नील झील-से नैन ... 224
कौन सरसी को अकेली और सहमी ... 226
कौन हंसिनियाँ लुभाए हैं तुझे ऐसा कि तुझको मानसर भूला हुआ है 228
हो चुका है चार दिन मेरा तुम्हारा हेम हंसिनि, और इतना भी
यहाँ पर कम नहीं है ... 229
मधुर प्रतीक्षा ही जब इतनी, प्रिय, तुम आते, तब क्या होता ... 230
मेरे उर की पीर पुरातन तुम न हरोगे, कौन हरेगा ... 231
आज मलार कहीं तुम छेड़े, मेरे नयन भरे आते हैं ... 233
तन के सौ सुख, सौ सुविधा में मेरा मन वनवास दिया-सा ... 234
तुमको छोड़ कहीं जाने को आज हृदय स्वच्छन्द नहीं है ... 235

धार के इधर-उधर (1940-1950)

रक्तस्नान ... 237
व्याकुलता का केंद्र ... 238

Scanned by TapScanner

मनुष्य की मूर्ति ... 238
आप किनके साथ हैं ... 239
आज़ाद हिंदुस्तान का आह्वान ... 241
देश के नाविकों से ... 242
आज़ादी की दूसरी वर्षगाँठ ... 243
ओ मेरे यौवन के साथी ... 244

आरती और अंगारे (1950-1957)

ओ उज्जयिनी के वाक्-जयी जगवंदन ... 248
खजुराहो के निडर कलाधर, अमर शिला में गान तुम्हारा ... 249
याद आते हो मुझे तुम, ओ, लड़कपन के सवेरों के भिखारी ... 250
श्यामा रानी थी पड़ी रोग की शय्या पर ... 251
अंग से मेरे लगा तू अंग ऐसे, आज तू ही बोल मेरे भी गले से ... 253
गर्म लोहा पीट, ठंडा पीटने को वक्त बहुतेरा पड़ा है ... 254
पीठ पर धर बोझ अपनी राह नापूं ... 256
इस रुपहरी चाँदनी में सो नहीं सकते पखेरू और हम भी ... 257
आज चंचला की बाहों में उलझा दी हैं बाहें मैंने ... 258
साथ भी रखता तुम्हें तो, राजहंसिनि ... 259
बौरे आमों पर बौराए भौंर न आए, कैसे समझूं मधुऋतु आई ... 261
अब दिन बदले, घड़ियाँ बदलीं ... 262
मैं सुख पर, सुखमा पर रीझा, इसकी मुझको लाज नहीं है ... 263
माना मैंने मिट्टी, कंकड़, पत्थर पूजा ... 265
दे मन का उपहार सभी को, ले चल मन का भार अकेले ... 266
मैंने जीवन देखा, जीवन का गान किया ... 267
मैंने ऐसा कुछ कवियों से सुन रक्खा था ... 268
रात की हर साँस करती है प्रतीक्षा ... 270
यह जीवन औ' संसार अधूरा इतना है ... 271
मैं अभी ज़िंदा, अभी यह शव-परीक्षा मैं तुम्हें करने न दूंगा ... 272

बुद्ध और नाचघर (1944-1957)

नया चाँद ... 275
डैफ़ोडिल ... 275
शैल विहंगिनी ... 279
पपीहा और चील-कौए ... 287

Scanned by TapScanner

चोटी की बरफ़ ... 291
युग का जुआ ... 293
नीम के दो पेड़ ... 297
जीवन के पहिए नीचे, जीवन के पहिए के ऊपर ... 300
बुद्ध और नाचघर ... 304

त्रिभंगिमा (1958-1960)

पगला मल्लाह ... 311
गंगा की लहर ... 313
सोन मछरी ... 314
लाठी और बाँसुरी .. 316
खोई गुजरिया ... 317
नील परी ... 318
महुआ के नीचे ... 320
आँगन का बिरवा ... 321
फिर चुनौती ... 322
मिट्टी से हाथ लगाए रह ... 324
तुम्हारी नाट्यशाला ... 325
गीतशेष ... 327
रात-राह-प्रीति-पीर ... 328
जाल-समेटा ... 329
जब नदी मर गई—जब नदी जी उठी ... 330
टूटे सपने ... 334
चेतावनी ... 336
ताजमहल ... 340
वह भी देखा : यह भी देखा ... 342
दानवों का शाप ... 343

चार खेमे चौंसठ खूंटे (1960-1962)

चल बंजारे ... 349
नभ का निमंत्रण ... 351
कुम्हार का गीत ... 353
जामुन चूती है ... 354
गंधर्व-लास ... 355

Scanned by TapScanner

	...	358
आगाही	...	360
मालिन बीकानेर की	...	361
रुपैया	...	362
वर्षाऽमंगल	...	365
राष्ट्र-पिता के समक्ष	...	369
आज़ादी के चौदह वर्ष	...	370
ध्वस्त पोत	...	374
स्वाध्याय कक्ष में वसंत	...	378
कलश और नींव का पत्थर	...	379
दैत्य की देन	...	381
बुद्ध के साथ एक शाम	...	383
पानी-मरा मोती : आग-मरा आदमी	...	385
तीसरा हाथ	...	386
दो चित्र	...	387
मरण काले		

1962-1963 की रचनाएँ

सूर समर करनी करहिं	...	389
उघरहिं अन्त न होइ निबाहू	...	391
गांधी	...	393
युग-पंक : युग-ताप	...	394
गत्यवरोध	...	396
शब्द-शर	...	398
लेखनी का इशारा	...	400
विभाजितों के प्रति	...	402
भिगाए जा रे	...	403
दिये की माँग	...	404
दो बजनिए	...	406
खून के छापे	...	408

बहुत दिन बीते

कोयल : कैक्टस : कवि	...	412
बाढ़	...	415

Scanned by TapScanner

हंस-मानस की नर्तकी ... 415
पहाड़-हिरन : घोड़ा : हाथी ... 417

कटी प्रतिमाओं की आवाज़

युग नाद ... 421
जड़ की मुसकान ... 425
ईश्वर ... 427
महाबलिपुरम् ... 428

उभरते प्रतिमानों के रूप

महानगर ... 432
पगडण्डी सड़क ... 438
आस्था ... 439
पाँच मूर्तियाँ ... 439

जाल समेटा

एक पावन मूर्ति ... 444
कड़ुआ पाठ ... 447
बूढ़ा किसान ... 449
मेरा संबल ... 449

संकलित कविताएँ (1973-83)

चल चुका युग एक जीवन ... 451
एहसास ... 452
मुनीश की आत्महत्या पर ... 453
हियां नहीं कोऊ हमार ! ... 455

और अंत में :

सोपान पर से : सुमित्रानंदन पंत (भूमिका) ... 457-480

Scanned by TapScanner